एक कहानी यह भी

2016
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 1.
‘मन्नू भंडारी की माँ त्याग और धैर्य की पराकाष्ठा थीं– फिर भी लेखिका के लिए आदर्श न बन सकीं।’ क्यों?

Answer:
“लेखिका मन्नू भंडारी की माँ त्याग और धैर्य की पराकाष्ठा थीं।” त्याग व परिश्रम की मूर्ति थीं, फिर भी वह लेखिका की आदर्श न बन सकीं क्योंकि लेखिका को अपनी माँ का चुपचाप हर बात को मान लेना, पिताजी की किसी भी बात का विरोध न करना, अपने लिए कोई आवाज़ न उठाना, परिवार के लिए अपनी इच्छाओं का दमन कर अपने को उनकी खुशी के लिए स्वाहा कर देना लेखिका के व्यक्तित्व के विपरीत था। लेखिका उस समय की सक्रिय युवती थीं जो हर अनैतिकता के खिलाफ़ खड़ी होतीं थीं, जुलूस व हड़तालों में भाग लेती थीं। वह उत्साह और ओज से भरी आज़ादी के लिए लड़ने वाली युवती थीं। उन्हें अपनी माँ का दब्बूपन व अत्याचार का विरोध न करना कभी पसंद न आया।

Question 2.
मन्नू भंडारी की ऐसी कौन-सी खुशी थी जो 15 अगस्त, 1947 की खुशी में समाकर रह गई?

Answer:
मन्नू भंडारी ने 1947 के आंदोलन में जोश व उत्साह के साथ भाग लिया। हड़तालों, जूलूसों व प्रभातफेरियों में ज़ोर-शोर से नारे लगाए। उनके जोशीले भाषण की तारीफ़ हुई। मई 1947 में उनकी अध्यापिका शीला अग्रवाल को अनुशासन भंग करने के आरोप में विद्यालय से निकाल दिया, जिसका विरोध सभी विद्यार्थियों व लेखिका ने भी किया। थर्ड इयर की कक्षाएँ बंद कर दी गईं पर लड़कियों ने इतना हुड़दंग मचाया कि कॉलिज वालों को अगस्त में कॉलेज फिर खोलना पड़ा। शताब्दी की सबसे बड़ी उपलब्धि 15, अगस्त 1947 को मिलने वाली आज़ादी के बीच लेखिका की विद्यालय पुनः खुलवाने, जोशीले भाषणों की प्रशंसा होने व आज़ादी के लिए स्वतंत्र रूप से सभी बंधन तोड़ने की सभी खुशियाँ, आज़ादी पाने की खुशी में समा गईं।

Question 3.
मन्नू भंडारी के पिता की कौन-कौन सी विशेषताएँ अनुकरणीय हैं?

Answer:

मन्नू भंडारी के पिता एक विरोधाभासी व्यक्तित्व के व्यक्ति थे। उनकी अनेक विशेषताएँ अनुकरणीय हो सकती हैं–

(*i*) वे बेहद कोमल और संवेदनशील व्यक्ति थे। अपने बच्चों की भावनाओं को समझते **थे।**

(*ii*) वे शिक्षा के प्रति अत्यंत जागरूक थे। वे इसके प्रसार के लिए घर में आठ-दस बच्चों **को शिक्षित** करने का दायित्व खुशी से उठाते थे।

(*iii*) उनकी देशप्रेम की भावना अनुकरणीय है। वे चाहते थे कि मन्नू उनके घर में आए दिन होने वाली राजनैतिक पार्टियों का हिस्सा बने।

(*iv*) वे यश पाने के इच्छुक थे और विशिष्ट बनकर जीना चाहते थे और उसके लिए प्रयासरत रहते थे।

(*v*) उनके द्वारा बेटी के अच्छे कार्यों व भाषण आदि पर गर्व करना और देशप्रेम के प्रति अग्रसर करना भी अनुकरणीय है।

Question 4.

शीला अग्रवाल जैसी प्राध्यापिका किसी भी विद्यार्थी के जीवन को कैसे सँवार सकती हैं?

Answer:

लेखिका के लिए शीला अग्रवाल जी केवल विषयगत ज्ञान देने वाली शिक्षिका नहीं थीं, बल्कि एक सच्ची मार्गदर्शक थीं। उनकी प्रेरणा ने लेखिका के अंदर एक अद्भुत आत्मविश्वास भर दिया था।उन्होंने लेखिका को जीवन में सही निर्णय लेकर बाधाओं का सामना करते हुए आगे बढ़ना सिखाया। उनके पदचिह्नों पर चलते हुए वे सामाजिक आंदोलनों एवं गतिविधियों में भाग लेकर उन दकियानूसी घरेलू बंदिशों को तोड़ने में कामयाब रहीं, जिन्हें तोड़ना उन दिनों न केवल उनके लिए, बल्कि हर लड़की के लिए बेहद मुश्किल काम था। अतः कहा जा सकता है कि शीला अग्रवाल जी जैसी अध्यापिका किसी भी विद्यार्थी के जीवन को सँवार सकती हैं।

2015

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 5.

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

आए दिन विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के जमावड़े होते थे और जमकर बहसें होती थीं। बहस करना पिता जी का प्रिय शगल था। चाय-पानी या नाश्ता देने जाती तो पिता जी मुझे भी वहीं बैठने को कहते। वे चाहते थे कि मैं भी वहीं बैठूँ, सुनूँ और जानूँ कि देश में चारों ओर क्या कुछ हो रहा है। देश में हो भी तो कितना कुछ रहा था। सन् 42 के आंदोलन के बाद से तो सारा देश जैसे खौल रहा था, लेकिन विभिन्न राजनैतिक पार्टियों की नीतियाँ, उनके आपसी विरोध या मतभेदों की तो मुझे दूर-दूर तक कोई समझ नहीं थी। हाँ, क्रांतिकारियों और देशभक्त शहीदों के रोमानी आकर्षण, उनकी कुर्बानियों से ज़रूर मन आक्रांत रहता था।

(क) लेखिका के पिता लेखिका को घर में होने वाली बहसों में बैठने को क्यों कहते थे?

(ख) घर के ऐंसे वातावरण का लेखिका पर क्या प्रभाव पड़ा?

(ग) देश में उस समय क्या-कुछ हो रहा था?

Answer:

(क) लेखिका के पिता लेखिका को घर में होने वाली बहसों में बैठने के लिए इसलिए कहते थे, ताकि वह भी देश में घटित होने वाली घटनाओं और देश के आंदोलनों के विषय में जान सके।

(ख) घर में होने वाली राजनैतिक पार्टियों, क्रांतिकारियों व देशभक्तों के आने-जाने से उनके देशप्रेम व उनकी कुर्बानियों के प्रति लेखिका के संवेदनशील मन पर उसका व्यापक असर पड़ा और वह भी देश में होने वाली घटनाओं से जुड़ने लगीं।

(ग) देश में उस समय आज़ादी पाने के लिए संघर्ष चरमोत्कर्ष पर था। सन् 42 के आंदोलन के बाद से सारा देश आक्रोश से भरा था।

Question 6.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

इसने उन्हें यश और प्रतिष्ठा तो बहुत दी, पर अर्थ नहीं और शायद गिरती आर्थिक स्थिति ने ही उनके व्यक्तित्व के सारे सकारात्मक पहलुओं को निचोड़ना शुरू कर दिया। सिकुड़ती आर्थिक स्थिति के कारण और अधिक विस्फारित उनका अहं उन्हें इस बात तक की अनुमति नहीं देता था कि वे कम-से-कम अपने बच्चों को तो अपनी आर्थिक विवशताओं का भागीदार बनाएँ। नवाबी आदतें, अधूरी महत्वाकांक्षाएँ, हमेशा शीर्ष पर रहने के बाद हाशिए पर सरकते चले जाने की यातना क्रोध बनकर हमेशा माँ को कँपाती-थरथराती रहती थी। अपनों के हाथों विश्वासघात की जाने कैसी गहरी चोटें होंगी वे जिन्होंने आँख मूँदकर सबका विश्वास करने वाले पिता को बाद के दिनों में इतना शक्की बना दिया था कि जब-तब हम लोग भी उसकी चपेट में आते ही रहते।

(क) मन्नू भंडारी के पिता की गिरती आर्थिक स्थिति का उन पर क्या प्रभाव पड़ा?

(ख) पहले इंदौर में उनकी आर्थिक स्थिति कैसी रही होगी?

(ग) मन्नू के पिता का स्वभाव शक्की क्यों हो गया था?

Answer:

(क) पिता की गिरती आर्थिक स्थिति ने उनके व्यक्तित्व के सारे सकारात्मक पहलुओं को निचोड़ना शुरू कर दिया। सिकुड़ती आर्थिक तंगी के कारण उनका अहं, उन्हें अपने बच्चों को अपनी आर्थिक विवशता में भागीदार बनाने से रोकता।

(ख) इंदौर में उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी थी। वहाँ उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। दस-दस विद्यार्थियों को अपने घर में रखकर पढ़ाया करते थे। उन दिनों घर में खुशहाली थी।

(ग) मन्नू के पिता का स्वभाव शक्की इसलिए हो गया था क्योंकि उन्हें अपने लोगों के हाथों विश्वासघात झेलना पड़ा था।

Question 7.

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

अपनी ज़िंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ़्लैट में रहने वालों को हमारे इस परंपरागत 'पड़ोस-कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है। मेरी कम-से-कम एक दर्जन आरंभिक कहानियों के पात्र इसी मोहल्ले के हैं जहाँ मैंने अपनी किशोरावस्था गुज़ार अपनी युवावस्था का आरंभ किया था। एक-दो को छोड़कर उनमें से कोई भी पात्र मेरे परिवार का नहीं है। बस इनको देखते-सुनते, इनके बीच ही मैं बड़ी हुई थी लेकिन इनकी छाप मेरे मन पर कितनी गहरी थी, इस बात का अहसास तो मुझे कहानियाँ लिखते समय हुआ। इतने वर्षों के अंतराल ने भी उनकी भाव-भंगिमा, भाषा, किसी को भी धुँधला नहीं किया था और बिना किसी विशेष प्रयास के बड़े सहज भाव से वे उतरते चले गए थे।

(क) परंपरागत पड़ोस-कल्चर की कोई एक अच्छाई और कोई एक बुराई लिखिए।

(ख) मन्नू भंडारी अपने मोहल्ले से कैसे प्रभावित हुईं?

(ग) 'बिना किसी विशेष प्रयास के बड़े सहज भाव से वे उतरते चले गए थे।' इस पंक्ति का संदर्भ स्पष्ट कीजिए।

Answer:

(क) **अच्छाई–** परंपरागत पड़ोस में सभी के सुख-दुख साँझा होते हैं। एक घर की दीवारें दूसरे घरों तक फैली रहती हैं। अर्थात एक-दूसरे के घरों में खूब आना-जाना होता है।

बुराई– परंपरागत पड़ोस में दकियानूसी बातें मानी जाती हैं कि लड़की को बाहर मत भेजो, लड़कों के समान मत पढ़ाओ।

(ख) मन्नू भंडारी को अपने मोहल्ले में बेहद प्यार और अपनापन मिला था। इसी कारण उनकी कहानियों के अनेक पात्र उसी मोहल्ले के हैं। उनकी किशोरावस्था बड़ों-बुज़ुर्गों के आशीर्वाद और अनुभवों के बीच गुज़री। अतः वे मोहल्ले के इस प्रेमपूर्ण वातावरण से उत्पन्न आत्मविश्वास व अपनेपन से प्रभावित हुईं।

(ग) 'बिना किसी विशेष प्रयास के बड़े सहज भाव से वे उतरते चले गए थे'– पंक्ति में मन्नू भंडारी मोहल्ले के उन पात्रों के विषय में बात कर रही हैं, जो उनके मोहल्ले के थे और उनकी भाव-भंगिमा, भाषा व उनका प्यार उनके मानस पटल पर सदा के लिए अंकित हो गया था और वे उनकी कहानियों के पात्रों में अनायास ही ढल गए थे।

2014

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 8.

उस घटना का उल्लेख कीजिए जिसके बारे में 'एक कहानी यह भी' की लेखिका को न अपने कानों पर विश्वास हो पाया और न आँखों पर।

Answer:

'एक कहानी यह भी' की लेखिका मन्नू भंडारी यहाँ उस घटना का उल्लेख कर रही हैं जिसमें उनके कॉलिज के प्रिंसिपल का पत्र उनके पिता को बुलाने के लिए आया, तो पिताजी क्रोधित हो गए कि लेखिका के अनुशासनहीन कार्यों के लिए उन्हें यह दिन देखना पड़ेगा। पता नहीं वहाँ जाकर क्या-क्या सुनना पड़ेगा, लेकिन जब पिताजी वापस आए और खुश होकर कहने लगे कि प्रिंसिपल बहुत परेशान हैं और कह रहे हैं कि आप अपनी पुत्री को घर बैठा लें क्योंकि पूरा कॉलिज इन तीन लड़कियों के इशारों पर नाच रहा है— एक इशारे पर सारी लड़कियाँ मैदान में निकलकर नारे लगाने लगती हैं, तब पिताजी और गर्व से कहने लगे कि यह तो पूरे देश की पुकार है, इसे कैसे रोक सकते हैं। यह सब अपने विषय में पिताजी से सुनकर लेखिका को अपनी आँखों और कानों पर विश्वास न हुआ।

Question 9.

देश के स्वतंत्रता आंदोलन में मन्नू भंडारी की भागीदारी के दो उदाहरण दीजिए।

Answer:

देश के स्वतंत्रता आंदोलन में मन्नू भंडारी ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

(*i*) जब देश में आज़ादी से पहले जगह-जगह आज़ादी पाने के लिए प्रभात फेरियाँ निकलती, हड़तालें होती और जुलूस निकलते, तो मन्नू भंडारी उनमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लेतीं।

(*ii*) लेखिका स्कूल, कॉलिज में कक्षाएँ छोड़कर सभी विद्यार्थियों को इकट्ठा कर देशप्रेम के नारे लगातीं। मन्नू भंडारी ने मुख्य बाज़ार के चौराहे पर जोशीला भाषण भी दिया, जिसकी सभी ने प्रशंसा भी की।

Question 10.

मन्नू भंडारी की अपने पिता से वैचारिक टकराहट के कारणों का उल्लेख कीजिए।

Answer:

मन्नू भंडारी का अपने पिता से वैचारिक टकराहट के अनेक कारण थे–

(*i*) मन्नू जब बाहर जाकर लड़कों के समान हड़तालें कराती, नारे लगाती, सड़कों पर घूमती तो पिता को यह सब पसंद न आता।

(*ii*) उनके पिता उनके सामने ही बड़ी बहन के रंग-रूप की तारीफ़ करते, जो मन्नू को बहन से अपनी तुलना के कारण ज़रा भी पसंद न आता।

(*iii*) पिता के द्वारा उसकी आज़ादी पर बंधन लगाना भी लेखिका को पसंद न आता।

(*iv*) लेखिका के पिता देश की स्थितियों के प्रति जागरूक थे, पर लड़कियों को घर में रखना पसंद करते थे, जो लेखिका को पसंद न आता था।

Question 11.

मन्नू भंडारी के लेखकीय व्यक्तित्व-निर्माण में शीला अग्रवाल की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

Answer:

लेखिका मन्नू भंडारी के व्यक्तित्व-निर्माण में उनकी हिंदी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उनके साथ की गई लंबी बहसों ने लेखिका को साहित्य समझने की दृष्टि प्रदान की। उन्हें साहसी बनाने में भी शीला जी का योगदान रहा। शीला जी ने ही उनके अंदर देशभक्ति की भावना प्रबल रूप से जगाई व देश की गतिविधियों में उन्हें सक्रिय रूप से भागीदार बनने में अहम भूमिका निभाई। शीला अग्रवाल की जोशीली बातों ने उनकी रगों में बहते खून को लावे में बदल दिया। वह नारे लगातीं, हड़ताल करातीं और लड़कों के साथ जुलूसों में साहस के साथ हिस्सा लेतीं।

Question 12.

मन्नू भंडारी की माँ को किन गुणों की दृष्टि से आदर्श माँ कहा जा सकता है? लेखिका उन गुणों को अपना आदर्श क्यों न बना सकी?

Answer:

लेखिका मन्नू भंडारी की माँ एक आदर्श माँ थीं क्योंकि उनमें निम्नलिखित गुण थे–

(*i*) वे धरती के समान धैर्यवान महिला थीं और सहनशील थीं। वे पिताजी द्वारा की गई सभी ज़्यादतियों को चुपचाप सह लेतीं। बात को आगे न बढ़ातीं और घर में शांति बनाए रखतीं।

(*ii*) वे अपने सभी कर्तव्यों को तन-मन से पूरा करतीं। बच्चों की हर उचित-अनुचित माँगों को पूरा करने की हर संभव कोशिश करतीं।

(*iii*) वे एक सीधी-सादी, कम इच्छाएँ रखने वाली महिला थीं। उन्होंने अपने लिए कभी किसी से कुछ न माँगा। लेखिका इन गुणों को अपना आदर्श इसलिए न बना पाई क्योंकि उन्हें माँ द्वारा इस प्रकार हर ज़्यादतियों को सहना, अपने अधिकारों के प्रति आवाज़ न उठाना, ज़रूरत से ज़्यादा सहनशील व धैर्यवान होना कभी अच्छा न लगा। वह माँ के समान एक दब्बू व्यक्ति का जीवन नहीं जीना चाहती थीं। लेखिका एक स्वतंत्र विचारों वाली महिला थीं।

Question 13.

मन्नू भंडारी के लेख के आधार पर स्वाधीनता आंदोलन में लेखिका की भूमिका को रेखांकित कीजिए।

Answer:

स्वाधीनता आंदोलन में मन्नू भंडारी ने सक्रिय रूप से भाग लिया। उन दिनों 1942 के स्वतंत्रता आंदोलन के फलस्वरूप सारे देश में जोश व जागृति थी। जगह-जगह जुलूस, प्रभात फेरियाँ और हड़तालें होती थीं। देश के युवा इन सब में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे। राजनैतिक पार्टियों में आज़ादी के लिए चर्चाएँ व योजनाएँ बनती थी। देश पर बलिदान होने वाले क्रांतिकारियों व देशभक्तों ने शहीद होकर युवाओं में प्रेरणा भर दी थी। मन्नू भी इन सब में बढ़-चढ़कर भाग लेती थीं। जुलूस निकालतीं, हड़तालें करतीं और उन्होंने बाज़ार के चौराहे पर ज़ोरदार भाषण भी दिया, जिसकी चारों तरफ़ प्रशंसा हुई। डॉ० अंबालाल ने उनके पिता से उनकी तारीफ़ करते हुए ये भी कहा था– “आई एम रियली प्राउड ऑफ़ यू...।”

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 14.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

पर यह पितृ-गाथा मैं इसलिए नहीं गा रही कि मुझे उनका गौरव-गान करना है, बल्कि मैं तो यह देखना चाहती हूँ कि उनके व्यक्तित्व की कौन-सी खूबी और खामियाँ मेरे व्यक्तित्व के ताने-बाने में गुँथी हुई हैं या कि अनजाने-अनचाहे किए उनके व्यवहार ने मेरे भीतर किन ग्रंथियों को जन्म दे दिया। मैं काली हूँ। बचपन में दुबली और मरियल भी थी। गोरा रंग पिताजी की कमज़ोरी थी सो बचपन में मुझसे दो साल बड़ी खूब गोरी, स्वस्थ और हँसमुख बहिन सुशीला से हर बात में तुलना और फिर उसकी प्रशंसा ने ही, क्या मेरे भीतर ऐसे गहरे हीन-भाव की ग्रंथि पैदा नहीं कर दी कि नाम, सम्मान और प्रतिष्ठा पाने के बावजूद आज तक मैं उससे उबर नहीं पाई? आज भी परिचय करवाते समय जब कोई कुछ विशेषता लगाकर मेरी लेखकीय उपलब्धियों का ज़िक्र करने लगता है तो मैं संकोच से सिमट ही नहीं जाती बल्कि गड़ने-गड़ने को हो आती हूँ।

(क) लेखिका द्वारा अपने पिता के व्यक्तित्व के विषय में लिखने का उद्देश्य है–

(*i*) उनका गौरव-गान।
(*ii*) उनके गुण-दोषों की चर्चा।
(*iii*) अपने व्यक्तित्व की संरचना में उनका प्रभाव।
(*iv*) उनके व्यक्तित्व के विभिन्न रूपों का बखान।

(ख) लेखिका की हीन-भावना का कारण था–

(*i*) पिताजी का अनजाना-अनचाहा व्यवहार। (*ii*) पिताजी का क्रोधी तथा शक्की स्वभाव।
(*iii*) लेखिका का रूप-रंग तथा बहिन से तुलना। (*iv*) गोरी, स्वस्थ और हँसमुख बहिन।

(ग) लेखिका के मन में उपजी हीन-भावना का क्या परिणाम हुआ?

(*i*) साहित्यिक चिंतन बाधित हुआ।
(*ii*) स्वास्थ्य और गतिविधियाँ प्रभावित हुईं।
(*iii*) उपलब्धि और प्रतिष्ठा के बाद भी आत्मविश्वास न रहा।
(*iv*) पिता के प्रति व्यवहार सराहनीय न रहा।

(घ) लेखकीय उपलब्धियों के प्रशंसा के क्षणों में भी लेखिका के अतिशय संकोच का कारण है–

(*i*) उपलब्धियों की कमी। (*ii*) रचनाओं की सदोषता।
(*iii*) हीन-भावना का प्रभाव। (*iv*) विनम्र और संकोची स्वभाव।

(ङ) 'उपलब्धि' का समानार्थक शब्द है–

(*i*) उपेक्षा (*ii*) अपेक्षा
(*iii*) समाप्ति (*iv*) प्राप्ति

Answer:

(क) (*iii*) अपने व्यक्तित्व की संरचना में उनका प्रभाव।
(ख) (*iii*) लेखिका का रूप-रंग तथा बहिन से तुलना।
(ग) (*iii*) उपलब्धि और प्रतिष्ठा के बाद भी आत्मविश्वास न रहा।
(घ) (*iii*) हीन-भावना का प्रभाव।
(ङ) (*iv*) प्राप्ति।

Question 15.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

शायद गिरती आर्थिक स्थिति ने ही उनके व्यक्तित्व के सारे सकारात्मक पहलुओं को निचोड़ना शुरू कर दिया। सिकुड़ती आर्थिक स्थिति के कारण और अधिक विस्फारित उनका अहं उन्हें इस बात तक की अनुमति नहीं देता था कि वे कम-से-कम अपने बच्चों को तो अपनी आर्थिक विवशताओं का भागीदार बनाएँ। नवाबी आदतें, अधूरी महत्त्वाकांक्षाएँ, हमेशा शीर्ष पर रहने के बाद हाशिए पर सरकते चले जाने की यातना क्रोध बनकर हमेशा माँ को कँपाती-थरथराती रहती थीं। अपनों के हाथों विश्वासघात की जाने कैसी गहरी चोटें होंगी वे जिन्होंने आँख मूँदकर सबका विश्वास करने वाले पिता को बाद के दिनों में इतना शक्की बना दिया था कि जब-तब हम लोग भी उसकी चपेट में आते रहते।

(क) पिता के व्यक्तित्व में सकारात्मक पहलू न रहने के पीछे कारण थे–

(*i*) निरंतर पुस्तक-पुस्तिकाओं का अध्ययन
(*ii*) समाज-सुधार के कार्यों में रुचि
(*iii*) आर्थिक स्थिति और अहंकार
(*iv*) नवाबी आदतें और पत्नी के प्रति क्रोध

(ख) 'विस्फारित अहं' का अभिप्राय है–

(*i*) बनावटी स्वाभिमान
(*ii*) बढ़ा हुआ ग़रूर
(*iii*) मिथ्याभिमान
(*iv*) मदांधता

(ग) लेखिका की माँ के प्रति उसके पिता के क्रोध का कारण था–

(*i*) बेहद क्रोधी और अहंवादी स्वभाव
(*ii*) अधूरी इच्छाएँ तथा प्रतिष्ठा गिरने का भय
(*iii*) पतनशील आर्थिक स्थिति से
(*iv*) पत्नी और संतान के बेमेल विचार

(घ) लेखिका के पिता का स्वभाव से शक्की बनने का कारण था।

(*i*) उनकी आर्थिक दशा
(*ii*) सकारात्मक दृष्टि न होना
(*iii*) अपनों की कृतघ्नता
(*iv*) अधूरी महत्त्वाकांक्षाएँ

(ङ) 'यातना' का समानार्थक नहीं है–

(*i*) वेदना
(*ii*) संवेदना
(*iii*) व्यथा
(*iv*) पीड़ा

Answer:

(क) (*iii*) आर्थिक स्थिति और अहंकार
(ख) (*iii*) मिथ्याभिमान
(ग) (*ii*) अधूरी इच्छाएँ तथा प्रतिष्ठा गिरने का भय
(घ) (*iii*) अपनों की कृतघ्नता
(ङ) (*ii*) संवेदना

2013

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 16.

देश की आज़ादी के संघर्ष में मन्नू भण्डारी की सक्रिय भागीदारी को लेकर पिताजी के साथ उनके टकराव की स्थिति को अपने शब्दों में लिखिए।

Answer:

देश की आज़ादी के संघर्ष में मन्नू भंडारी की सक्रिय भागीदारी को लेकर उनका अपने पिता के साथ टकराव होता रहता था। उनके पिता को उनका रसोई में काम करना पसंद न था और वे उसे घर में होने वाली राजनीतिक बैठकों में भाग लेने को कहते थे, पर दूसरी तरफ़ सामाजिक दवाब के कारण उन्हें अपनी पुत्री का सड़कों पर नारे लगाना, जुलूस में भाग लेना आदि पसंद न आता था।

कभी वे अपनी पुत्री की सक्रिय भागीदारी का विरोध करते, तो कभी मित्रों के द्वारा उनके भाषण की प्रशंसा सुनकर गर्व अनुभव करते। स्कूल की प्रिंसिपल के द्वारा बुलाए जाने पर और उनकी शिकायत लगाए जाने पर भी उन्हें बुरा नहीं लगा क्योंकि उनकी दृष्टि में आज़ादी के लिए हड़तालें करना, नारे लगाना समय की माँग थी। वास्तव में, उनके पिता आर्थिक, समाजिक और विकासशील प्रवृत्ति के बीच सामंजस्य बिठाने में असमर्थ रहे, इसलिए उनका लेखिका के विचारों से मतभेद रहा।

Question 17.

'मन्नू भंडारी' के पिता के व्यक्तित्व में संवेदनशीलता भी थी और अहंवादिता भी उदाहरण देकर इस कथन की पुष्टि कीजिए।

Answer:

'मन्नू भंडारी' के पिता एक विरोधाभासी व्यक्तित्व के व्यक्ति थे। बहुत बड़े आर्थिक संकट और अपनों के द्वारा दिए गए विश्वासघात से वे बुरी तरह टूट गए थे। एक तरफ़ तो वे बेहद कोमल और संवेदनशील थे। उन्हें अपनी पुत्री का रसोई में काम करना पसंद न आता। वे सोचते कि लड़कियों को भी राजनीति में सक्रिय योगदान देना चाहिए, वहीं दूसरी तरफ़ उनकी अहंवादिता और सामाजिक दबाव उसे लड़कों के समान बाहर जुलूस निकालने, हड़तालें करने से रोकने की कोशिश करता। एक ओर विशिष्ट बनने और बनाने की उनकी इच्छा, उन्हें संवेदनशील बनाती, तो अपनी पत्नी पर ज़्यादतियाँ करना उनका अहं प्रदर्शित करता है।

Question 18.

मन्नू भंडारी के जीवन में शीला अग्रवाल के योगदान पर प्रकाश डालिए।

Answer:

मन्नू भंडारी के जीवन में शीला अग्रवाल का महत्वपूर्ण योगदान रहा। वे उनकी हिंदी प्राध्यापिका थीं। उनके साथ की गई लंबी बहसों ने लेखिका को साहित्य समझने की दृष्टि प्रदान की थी। उन्हें साहसी व आत्मविश्वासी बनाने में भी शीला जी का योगदान रहा था। उन्होंने ही मन्नू के अंदर देशभक्ति की भावना प्रबल रूप से जगाई थी व देश की गतिविधियों में उन्हें सक्रिय रूप से भागीदार बनने में सहायक बनी थीं। शीला जी की जोशीली बातों ने उनकी रगों में बहते खून को 'लावा' में बदल दिया था। उन्हीं के मार्गदर्शन में उन्होंने हड़तालें करने, नारे लगाने, और जुलूस निकालने का कार्य आत्मविश्वास से किया था। मन्नू के प्रभावशाली भाषण देने में कहीं-न-कहीं शीला जी का प्रभाव था। मन्नू के व्यक्तित्व में उनकी अध्यापिका की छाप स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

Question 19.

'एक कहानी यह भी' की लेखिका को प्रारम्भ में हिन्दी के किस उपन्यास को समझने में कठिनाई हुई? कुछ सालों बाद उसी उपन्यास से क्या जानकारी प्राप्त हुई?

Answer:

'एक कहानी यह भी' की लेखिका मन्नू भंडारी को प्रारंभ में 'अज्ञेय' जी द्वारा रचित उपन्यास 'शेखर– एक जीवनी' को समझने में कठिनाई हुई क्योंकि लेखिका उस समय छोटी थी और बिना लेखकों की जानकारी के बस पुस्तकों को पढ़ती रहती थीं। पर जब उनका शीला अग्रवाल से परिचय हुआ, तब उन्होंने साहित्य की दुनिया में लेखिका का प्रवेश कराया। लेखिका ने तब शरत्चंद्र, प्रेमचंद, जैनेंद्र, अज्ञेय, यशपाल और भगवती चरण वर्मा तक सभी लेखकों को पढ़ डाला और पुनः एक बार 'शेखर– एक जीवनी' को पढ़ा और इस बार लेखिका को उसके जीवन मूल्य समझ आए। पढ़कर उसे पता चला कि यह शायद मूल्यों के मंथन का युग था। पाप-पुण्य, नैतिक-अनैतिक, सही-गलत की बनी बनाई धारणाओं को तर्क-वितर्क के साथ ध्वस्त किया जा रहा था।

Question 20.

आज़ादी की लड़ाई में मन्नू भंडारी की भागीदारी के सिलसिले में शीला अग्रवाल एवं उनके पिताजी के योगदान पर प्रकाश डालिए।

Answer:

आज़ादी की लड़ाई में मन्नू भंडारी की भागीदारी के लिए उनकी हिंदी अध्यापिका शीला अग्रवाल ने उन्हें प्रेरित किया था। उन्हें साहित्य समझने की नई दृष्टि देने के साथ-साथ साहसी और आत्मविश्वासी बनाया था। उनके अंदर देशभक्ति की भावना जागृत की थी। शीला जी की जोशीली बातों ने ही मन्नू की रगों में बहते खून को 'लावे' में बदल दिया था। उनसे ही प्रेरित हो मन्नू हड़तालें करतीं और जोशीले भाषण देती थीं।

मन्नू के पिताजी बचपन से ही उन्हें पढ़ाने-लिखने पर ज़ोर देते थे। साथ ही घर में होने वाली राजनीतिक सभाओं में हिस्सा लेने के लिए कहते थे। जिस कारण लेखिका में बचपन से ही देश की परिस्थितियों को समझने की समझ और देशप्रेम की भावना का उदय हुआ था। जब लेखिका ने सक्रिय रूप से आज़ादी की लड़ाई में भाग लेने के लिए हड़तालें कीं और जोशीले भाषण देने शुरू किए, तो पिता उनके इन कार्यों से गर्वित हुए।

Question 21.

लेखिका मन्नू भंडारी को साधारण से असाधारण बनाने में 'शीला अग्रवाल' की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

Answer:

लेखिका मन्नू भंडारी को साधारण से असाधारण बनाने में उनकी हिंदी अध्यापिका 'शीला अग्रवाल' ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके साथ की गई लंबी बहसों ने लेखिका को साहित्य समझने की दृष्टि प्रदान की। अनेक महत्त्वपूर्ण लेखकों को पढ़ने का सुझाव देकर शीला जी ने मन्नू के चिंतन और मनन को सँवारा। उन्हें साहसी और आत्मविश्वासी बनाया। उन्होंने ही असाधारण क्षमता का परिचय कराते हुए लेखिका को देश के स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदार बनाया। उनकी जोशीली बातों से ही लेखिका की रगों का खून लावा में बदल गया। उन्हीं के मार्गदर्शन में उन्होंने हड़तालें कीं, नारे लगाए, जुलूस व प्रभातफेरियाँ निकालीं और चौक पर प्रभावशाली भाषण दिया, जिसकी सभी ने प्रशंसा की थी। उचित ही है कि शीला जी ने मन्नू के व्यक्तित्व को निखार कर खरा सोना बना दिया।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 22.

निम्नांकित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

उस समय तक हमारे परिवार में लड़की के विवाह के लिए अनिवार्य योग्यता थी– उम्र में सोलह वर्ष और शिक्षा में मैट्रिक। सन् 44 में सुशीला ने यह योग्यता प्राप्त की और शादी करके कोलकाता चली गई। दोनों बड़े भाई भी आगे पढ़ाई के लिए बाहर चले गए। इन लोगों की छत्र-छाया के हटते ही पहली बार मुझे नए सिरे से अपने वजूद का एहसास हुआ। पिताजी का ध्यान भी पहली बार मुझ पर केंद्रित हुआ। लड़कियों को जिस उम्र में स्कूली शिक्षा के साथ-साथ सुघड़ गृहिणी और कुशल पाक-शास्त्री बनने के नुस्खे जुटाए जाते थे, पिताजी का आग्रह रहता था कि मैं रसोई से दूर ही रहूँ। रसोई को वे भटियारखाना कहते थे और उनके हिसाब से वहाँ रहना अपनी क्षमता और प्रतिभा को भट्टी में झोंकना था।

(क) लड़की की वैवाहिक योग्यता से सिद्ध होती है, उस परिवार की–

(*i*) स्वतंत्र विचारधारा
(*ii*) परंपरावादी मान्यता
(*iii*) पाश्चात्य विचारधारा
(*iv*) अत्याधुनिक सोच

(ख) बड़े बहन-भाई के परिवार से जाने के बाद–

(*i*) परिवार में लेखिका का महत्त्व बढ़ गया।
(*ii*) माता-पिता से अधिक प्यार मिलने लगा।
(*iii*) लेखिका को अपने अस्तित्व का बोध हुआ।
(*iv*) लेखिका को पाक-शास्त्र पढ़ाया जाने लगा।

(ग) लेखिका के पाक-शास्त्री बनने के विषय में पिताजी का मानना था–

(*i*) पाक-क्रिया की कुशलता से लड़की सुघड़ गृहिणी बनती है।
(*ii*) विवाह के उपरांत ससुराल में उसकी सराहना होती है।
(*iii*) उसका गृहस्थ जीवन सदा सुखी और स्वस्थ रहता है।
(*iv*) रसोई के काम से लड़की की योग्यता और प्रतिभा कुंद हो जाती है।

(घ) 'पिताजी का आग्रह था कि मैं रसोई से दूर ही रहूँ'– वाक्य का प्रकार है।

(*i*) सरल
(*ii*) संयुक्त
(*iii*) मिश्र
(*iv*) साधारण

(ङ) 'इन लोगों की छत्र-छाया हटते ही' कथन में 'इन लोगों' से तात्पर्य है–

(*i*) क्षमता और प्रतिभा
(*ii*) भाई-बहिन
(*iii*) माता-पिता
(*iv*) सखी-सहेली

Answer:

(क) (*ii*) परंपरावादी मान्यता
(ख) (*iii*) लेखिका को अपने अस्तित्व का बोध हुआ।
(ग) (*iv*) रसोई के काम से लड़की की योग्यता और प्रतिभा कुंद हो जाती है।
(घ) (*iii*) मिश्र वाक्य
(ङ) (*ii*) भाई-बहिन

Question 23.

निम्नांकित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

जन्मी तो मध्य प्रदेश के भानपुरा गाँव में थी, लेकिन मेरी यादों का सिलसिला शुरू होता है अजमेर के ब्रह्मपुरी मोहल्ले के उस दो-मंज़िला मकान से, जिसकी ऊपरी मंज़िल में पिताजी का साम्राज्य था, जहाँ वे निहायत अव्यवस्थित ढंग से फैली-बिखरी पुस्तकों-पत्रिकाओं और अख़बारों के बीच या तो कुछ पढ़ते रहते थे या फिर? 'डिक्टेशन' देते रहते थे। नीचे हम सब भाई-बहिनों के साथ रहती थीं। हमारी बेपढ़ी-लिखी व्यक्तित्वविहीन माँ... सवेरे से शाम तक हम सबकी इच्छाओं और पिता जी की आज्ञाओं का पालन करने के लिए सदैव तत्पर।

(क) यादों का सिलसिला का अभिप्राय है–
(*i*) यादों का इतिहास
(*ii*) स्मृतियों की शृंखला
(*iii*) याद करने योग्य बातें
(*iv*) सिलसिलेवार घटनाएँ

(ख) पिताजी के साम्राज्य का फैलाव था–
(*i*) दो-मंज़िले मकान तक
(*ii*) अपने कर्मचारियों तक
(*iii*) ऊपरी मंज़िल में स्थित उनके अध्ययन-कक्ष तक
(*iv*) मित्रों और परिचितों तक

(ग) माँ के विषय में कौन-सा कथन असत्य है?
(*i*) बहुत कृपण और गुस्सैल थीं।
(*ii*) अशिक्षित एवं व्यक्तित्वविहीन थीं।
(*iii*) संतान से प्यार करती थीं।
(*iv*) पति की आज्ञाकारी थीं।

(घ) 'डिक्टेशन' देने का अर्थ है–
(*i*) निर्देश देना
(*ii*) रौब जमाना
(*iii*) बोलकर लिखाना
(*iv*) तानाशाही चलाना

(ङ) 'तत्पर' का समानार्थक है–
(*i*) तटस्थ
(*ii*) उद्‌यत
(*iii*) तमस
(*iv*) तरीक़ा

Answer:

(क) (*ii*) स्मृतियों की शृंखला

(ख) (*iii*) ऊपरी मंज़िल में स्थित उनके अध्ययन-कक्ष तक

(ग) (*i*) बहुत कृपण और गुस्सैल थीं। (घ) (*iii*) बोलकर लिखाना

(ङ) (*ii*) उद्‌यत

Question 24.

निम्नलिखित गद्‌यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तरों वाले विकल्प छाँटिए–

गिरती आर्थिक स्थिति ने ही उनके व्यक्तित्व के सारे सकारात्मक पहलुओं को निचोड़ना शुरू कर दिया। सिकुड़ती आर्थिक स्थिति के कारण और अधिक विस्फारित उनका अहं उन्हें इस बात तक की अनुमति नहीं देता था कि वे कम-से-कम अपने बच्चों को तो अपनी आर्थिक विवशताओं का भागीदार बनाएँ। नवाबी आदतें, अधूरी महत्त्वाकांक्षाएँ, हमेशा शीर्ष पर रहने के बाद हाशिए पर सरकते चले जाने की यातना क्रोध बनकर हमेशा माँ को कँपाती-थरथराती रहती थीं। अपनों के हाथों विश्वासघात की जाने कैसी गहरी चोटें होंगी वे जिन्होंने आँख मूँदकर सबका विश्वास करने वाले पिता को बाद के दिनों में इतना शक्की बना दिया था कि जब-तब हम लोग भी उसकी चपेट में आते ही रहते।

(क) लेखिका के पिताजी के व्यक्तित्व को कुछ अंशों में नकारात्मक बनाया था–

(*i*) उनके क्रोध ने (*ii*) माताजी के व्यवहार ने
(*iii*) बच्चों की ज़रूरतों ने (*iv*) आर्थिक हालात ने

(ख) पिताजी बच्चों से किस विषय में बातें नहीं करते थे?

(*i*) बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के बारे में (*ii*) घर की ग़रीबी के बारे में
(*iii*) माताजी की कार्यशैली के बारे में (*iv*) घर में आने वाले लोगों के बारे में

(ग) पिताजी को शक्की बना दिया था–

(*i*) नवाबी आदतों ने (*ii*) अधूरी महत्त्वाकांक्षाओं ने
(*iii*) अपनों ही से प्राप्त विश्वासघात ने (*iv*) पिछड़ते जाने के दर्द ने

(घ) प्रस्तुत अनुच्छेद में वर्णन है–

(*i*) घर में पैर फैलाती अव्यवस्था का (*ii*) टूटती-गिरती आर्थिक स्थिति का
(*iii*) पिताजी की शक्की मनोदशा का
(*iv*) पिताजी के व्यक्तित्व के सकारात्मक पहलुओं का

(ङ) 'विश्वासघात' में समास है–

(*i*) तत्पुरुष (*ii*) कर्मधारय
(*iii*) द्‌वंद्‌व (*iv*) द्‌विगु

Answer:

(क) (*iv*) आर्थिक हालात ने

(ख) (*ii*) घर की ग़रीबी के बारे में

(ग) (*iii*) अपनों ही से प्राप्त विश्वासघात ने

(घ) (*ii*) टूटती-गिरती आर्थिक स्थिति का

(ङ) (*i*) तत्पुरुष समास

2012

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 25.

'एक कहानी यह भी' की लेखिका के पिताजी के व्यक्तित्व की चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

Answer:

'एक कहानी यह भी' की लेखिका मन्नू भंडारी के पिताजी एक प्रतिष्ठित व सम्मानित व्यक्ति थे। उनके व्यक्तित्व की चार प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

(*i*) **महत्वाकांक्षी व्यक्तित्व–** लेखिका के पिता यश और प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहते थे। इसका श्रेष्ठ उदाहरण मिलता है कि उन्होंने अकेले अंग्रेज़ी-हिंदी शब्दकोश के अधूरे काम को आगे बढ़ाया, जो कि अपनी तरह का पहला और अकेला शब्दकोश था।

(*ii*) **कोमल एवं संवेदनशील–** लेखिका के पिता बेहद कोमल एवं संवेदनशील व्यक्ति थे। आर्थिक स्थिति ख़राब होने पर भी उन्होंने कभी भी अपने बच्चों को आर्थिक विवशताओं का भागीदार नहीं बनाया।

(*iii*) **समाज सुधारक एवं सच्चे देशप्रेमी–** वे अनेक समाज सुधार के कामों से जुड़े हुए थे। उनके घर में राजनैतिक लोगों की गोष्ठियाँ होती थीं, जिसमें देशभक्तों और शहीदों की चर्चाएँ होती थीं।

(*iv*) **शिक्षा के प्रति सजग–** अर्थ अभाव की स्थिति में भी वे बच्चों की शिक्षा के प्रति सजग थे। शिक्षा के लिए वे केवल उपदेश नहीं देते थे, अपितु आठ-आठ, दस-दस विद्यार्थियों को अपने घर रखकर पढ़ाया करते थे।

Question 26.

'एक कहानी यह भी' की लेखिका ने अपनी माँ को व्यक्तित्वविहीन क्यों कहा है?

Answer:

'एक कहानी यह भी' की लेखिका मन्नू भंडारी ने अपनी माँ को व्यक्तिविहीन इसलिए कहा है क्योंकि वह पढ़ी-लिखी नहीं थीं। सुबह से शाम तब वह पिताजी की आज्ञाओं का पालन करने में और बच्चों की इच्छाओं की पूर्ति में उलझी रहती थीं। यद्‌यपि वह धैर्य और सहनशक्ति की प्रतिमूर्ति थीं, परंतु पिताजी की ज़्यादती को सहन करना उनके व्यक्तित्व को अस्तित्वविहीन करता था। बच्चों की हर उचित-अनुचित फ़रमाइश एवं ज़िद को पूरा करना वह अपना कर्तव्य समझती थीं। स्नेह एवं ममत्व से परिपूर्ण होने पर भी उनका व्यक्तित्व बिलकुल निरीह था। स्वयं के प्रति वह पूर्णतया लापरवाह थीं। अपने लिए उनकी कोई माँग नहीं थी। लेखिका की दृष्टि में उनकी माँ का अपना कोई वजूद या व्यक्तित्व नहीं था।

Question 27.

'एक कहानी यह भी' पाठ की लेखिका के व्यक्तित्व को किस-किसने प्रभावित किया है?

Answer:

'एक कहानी यह भी' पाठ की लेखिका का व्यक्तित्व निम्न लोगों से प्रभावित हुआ–

(*i*) **लेखिका के व्यक्तित्व पर उसके पिता का प्रभाव–** लेखिका के पिता के अनजाने, अनचाहे व्यवहार ने लेखिका के भीतर हीन ग्रंथि पैदा कर दी थी, जिससे वह बड़े होकर भी उबर नहीं पाई। वह काली थीं और उनकी बहन सुशीला गोरी थी। उनके पिताजी को गोरा रंग पसंद होने के कारण वह लेखिका की हर बात की तुलना उनकी बहन सुशीला से करते थे एवं उसकी प्रशंसा करते थे। इससे लेखिका के मन के भीतर जो एक बार हीन भाव की ग्रंथि पैदा हुई, वह सम्मान, प्रतिष्ठा एवं नाम प्राप्त करने पर भी मिट नहीं पाई। देशप्रेम की भावना का गुण भी उन्हें अपने पिता से विरासत में मिला।

(*ii*) **प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का प्रभाव**–प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने ही उन्हें साहित्य जगत से परिचित कराया। साहित्य को पढ़ने, समझने और उस पर बहस करने की प्रेरणा उन्हें शीला अग्रवाल से ही मिली। देश की स्थितियों को जानने-समझने की जो समझदारी उन्हें अपने पिता से मिली थी, शीला अग्रवाल ने उसे सक्रिय भागीदारी में बदलने की प्रेरणा दी और वह राष्ट्रीय आंदोलनों में भाग लेने लगीं। शीला अग्रवाल के नेतृत्व में वह भाषण, हड़ताल, जुलूस का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गई और यह सिलसिला विवाहोपरांत भी चलता रहा।

Question 28.

'एक कहानी यह भी' की लेखिका ने आस-पड़ोस की कल्चर के महत्त्व को कैसे समझाया है? महानगरों के निवासी उस कल्चर से वंचित क्यों हैं?

Answer:

‘एक कहानी यह भी’ की लेखिका ने यह समझाया है कि पड़ोस-कल्चर मनुष्य के जीवन में अहम भूमिका रखता है। मिलजुल कर रहने की प्रवृत्ति पड़ोस के कारण ही उत्पन्न होती है। आपसी मेलजोल, सहयोग की भावना, सद्‌भावना, सहानुभूति, भाईचारा– यह सब पड़ोस-कल्चर की ही देन हैं। स्वयं लेखिका इस पड़ोस-कल्चर की देन हैं। उनकी कहानियों के पात्र उनके पड़ोस के वे लोग हैं, जो सहज भाव से उनकी कहानियों में उतरते चले जाते हैं। उनके समय में परिवार की सीमा संपूर्ण पड़ोस तक जाती थी, परंतु आधुनिक जीवन में अत्यधिक व्यस्तता के कारण महानगरों के फ़्लैट में रहने वाली संस्कृति ने परंपरागत पड़ोस-क़ल्चर को खंडित कर दिया है। बच्चों को पड़ोस-कल्चर से अलग करके उन्हें अत्यधिक संकीर्ण, असहाय और असुरक्षित बना दिया है। महानगरों के निवासी अकेलेपन की पीड़ा से ग्रसित हैं। परिवार में रहते हुए भी उनकी स्थिति बंद कमरे तक सीमित हो गई है। व्यस्त जीवन ने उन्हें आपसी मेलजोल, संवेदनात्मक अनुभूति और परस्पर सहृदयता की भावना से वंचित कर दिया है।

Question 29.

उस घटना का उल्लेख कीजिए, जिसके बारे में सुनने पर ‘एक कहानी यह भी’ की लेखिका को अपनी आँखों और कानों पर विश्वास नहीं हुआ।

Answer:

लेखिका जिस कॉलेज में पढ़ती थी। उस कॉलेज की प्रिंसिपल ने लेखिका के विरुद्‌ध अनुशासनात्मक कार्यवाही हेतु लेखिका के पिता को बुलाया। लेखिका के पिता इस बात से आग-बबूला हो गए। उन्हें लगा कि उनके पाँचों बच्चों में से लेखिका उनका नाम डुबो रही है। पिताजी के कॉलेज जाने पर लेखिका पड़ोस में जाकर बैठ गई, ताकि वह पिताजी के लौटने पर उनके क्रोध से बच सके। परंतु जब लेखिका के पिताजी कॉलेज से लौटे तो वे बहुत प्रसन्न थे, गर्व से उनका चेहरा चमक रहा था। उनको इस बात की खुशी थी कि उनकी बेटी का कॉलेज की लड़कियों पर बहुत रौब है। पूरा कॉलेज तीन लड़कियों के इशारे पर खाली हो जाता है। प्रिंसिपल द्‌वारा कॉलेज चलाना असंभव हो रहा है। पिताजी को उस पर गर्व होने लगा कि वह देश की पुकार के समय देश के साथ चल रही है। पिताजी ने जब यह सब अभिव्यक्त कर कहा कि इसे रोकना असंभव है। यह सब सुनकर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हुआ और न अपने कानों पर।

Question 30.

मन्नू भंडारी अपने व्यक्तित्व में उभरी कुंठाओं और ग्रंथियों को पिता की देन क्यों मानती हैं?

Answer:

लेखिका के पिताजी के व्यवहार ने बचपन में ही लेखिका के मन में यह हीन भावना की ग्रंथि पैदा कर दी थी कि वह काली हैं। उनके पिताजी को गोरा रंग पसंद था इसलिए लेखिका से दो वर्ष बड़ी, खूब गोरी, स्वस्थ और हँसमुख बहन सुशीला से उसके पिता उसकी तुलना किया करते थे और हमेशा सुशीला की ही प्रशंसा किया करते थे। पिताजी के इस व्यवहार ने लेखिका के मन में हीन भाव की ग्रंथि पैदा कर दी थी। मान-सम्मान, प्रतिष्ठा पाने के उपरांत भी लेखिका इस कुंठा से उबर नहीं पाई। इतना ही नहीं पिताजी के शक्की स्वभाव के कारण लेखिका को बड़े होने पर अपने अंदर हीनता नज़र आने लगी, जिसके कारण वह खंडित विश्वासों की पीड़ा झेलने लगी। अपने भीतर 'अपनों' के हाथों विश्वासघात की गहरी व्यथा को महसूस करने लगी। वास्तव में, ये कुंठाएँ और ग्रंथियाँ पिता की ही देन थीं।

Question 31.

शीला अग्रवाल का मन्नू भंडारी को घर की चारदीवारी से बाहर निकलने को प्रेरित करना और पिताजी का घर के दायरे में रखना, इन दो दबावों से लेखिका कैसे जूझती है? स्पष्ट कीजिए।

Answer:

लेखिका के पिताजी के अनजाने, अनचाहे व्यवहार से लेखिका हीन-भावना एवं कुंठा से ग्रसित हो गई थी। वे उसे घर की चारदीवारी में रखकर देश और समाज के प्रति जागरूक तो बनाना चाहते थे, परंतु इसकी भी एक निश्चित सीमा थी। वे नहीं चाहते थे कि उनकी बेटी आंदोलनों में भाग ले या सड़क पर हड़तालों इत्यादि में शामिल हो। लेखिका और उनके पिताजी में सदैव वैचारिक टकराहट रही। लेखिका, जब प्राध्यापिका शीला अग्रवाल के संपर्क में आई, तब वह इस चारदीवारी से बाहर निकलने को प्रेरित हुई। प्रभात-फेरियाँ, हड़तालें, जुलूस सब में सक्रिय भाग लिया। शीला अग्रवाल की जोशीली बातों ने उसे देश के लिए सक्रिय होकर काम करने के लिए प्रेरित किया और फिर यह सिलसिला जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग बन गया। शीला अग्रवाल के निर्देशन को पाकर उनकी राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भागीदारी रही।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 32.

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और पूछे गये प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

हमने भाइयों के साथ गिल्ली-डंडा भी खेला और पतंग उड़ाने, काँच पीसकर माँजा सूतने का काम भी किया, लेकिन उनकी गतिविधियों का दायरा घर के बाहर ही अधिक रहता था और हमारी सीमा थी घर। हाँ, इतना ज़रूर था कि उस ज़माने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं, बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं। इसलिए मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबंदी नहीं थी बल्कि कुछ घर तो परिवार का हिस्सा ही थे। आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी ज़िंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ़्लैट में रहने वालों को हमारे इस परंपरागत 'पड़ोस कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है।

(क) लेखिका के भाइयों की गतिविधियों का दायरा घर के बाहर था, क्योंकि–

(*i*) उनकी गतिविधियाँ घर में संपन्न नहीं हो सकती थीं।
(*ii*) पतंग और गिल्ली-डंडा का खेल घर से बाहर का था।
(*iii*) घर से बाहर उनकी गतिविधियों पर कोई नियंत्रण नहीं था।
(*iv*) पारिवारिक परंपरा के अनुसार पुरुष को बाहर जाने की स्वतंत्रता थी।

(ख) लेखिका की सीमा घर ही क्यों थी?

(*i*) लड़कियाँ डरपोक स्वभाव के कारण घर की सीमा में ही रहती थीं।
(*ii*) घर से बाहर का वातावरण उनके लिए असुरक्षित था।
(*iii*) समाज में लड़कियों का बाहर जाना ठीक नहीं माना जाता था।
(*iv*) पारिवारिक परंपरा के अनुसार यही नियम था।

(ग) 'उस ज़माने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले में फैली रहती थीं' वाक्य का आशय है–

(*i*) घर और पड़ोसी के बीच में कोई विभाजक दीवार नहीं थी।
(*ii*) पूरा मोहल्ला एक-दूसरे के सुख-दुख का हिस्सेदार था।
(*iii*) आपसी प्रेमभाव के कारण पूरे मोहल्ले में पारिवारिक संबंध थे।
(*iv*) परंपरागत 'पड़ोस कल्चर' पड़ोसी को भी परिवार का सदस्य मानती थी।

(घ) परंपरागत 'पड़ोसकल्चर' से विच्छिन्न होने का परिणाम है–

(*i*) हम फ़्लैटों में रहने लगे हैं।
(*ii*) पारस्परिक प्रेमभाव क्षीण हो गया है।
(*iii*) सामाजिकता घट गई है।
(*iv*) हम असहाय, असुरक्षित और संकुचित हो गए हैं।

(ङ) 'हमने गिल्ली-डंडा भी खेला और पतंग उड़ाने का काम भी किया'। वाक्य का प्रकार है–

(*i*) सरल वाक्य
(*ii*) मिश्र वाक्य
(*iii*) संयुक्त वाक्य
(*iv*) दीर्घ वाक्य

Answer:

(क) (*iv*) पारिवारिक परंपरा के अनुसार पुरुष को बाहर जाने की स्वतंत्रता थी।
(ख) (*iv*) पारिवारिक परंपरा के अनुसार यही नियम था।
(ग) (*iii*) आपसी प्रेमभाव के कारण पूरे मोहल्ले में पारिवारिक संबंध थे।
(घ) (*i*) हम फ़्लैटों में रहने लगे हैं।
(ङ) (*iii*) संयुक्त वाक्य

Question 33.

निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

जन्मी तो मध्य प्रदेश के भानपुरा गाँव में थी, लेकिन मेरी यादों का सिलसिला शुरू होता है अजमेर के ब्रह्मपुरी मोहल्ले के उस दो-मंज़िला मकान से, जिसकी ऊपरी मंज़िल में पिताजी का साम्राज्य था, जहाँ वे निहायत अव्यवस्थित ढंग से फैली-बिखरी पुस्तकों-पत्रिकाओं और अख़बारों के बीच या तो कुछ पढ़ते रहते थे या फिर 'डिक्टेशन' देते रहते थे। नीचे हम सब भाई-बहिनों के साथ रहती थीं–हमारी बेपढ़ी-लिखी व्यक्तित्वविहीन माँ... सवेरे से शाम तक हम सबकी इच्छाओं और पिताजी की आज्ञाओं का पालन करने के लिए सदैव तत्पर। अजमेर से पहले पिताजी इंदौर में थे, जहाँ उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी, सम्मान था, नाम था।

(क) यादों का सिलसिला शुरू होने का अर्थ है–

(*i*) बीती बातें याद आना।
(*ii*) बीती बातों के क्रमबद्ध विवरण की शुरुआत।
(*iii*) स्मृति-जगत का जागरूक होना।
(*iv*) महत्त्वपूर्ण बातों का श्रीगणेश।

(ख) पिताजी का साम्राज्य सिद्ध करता है कि वे–

(*i*) एक लेखक और पत्रकार थे।
(*ii*) प्रतिष्ठित अध्यापक थे।
(*iii*) अध्ययनशील व्यक्ति थे।
(*iv*) पेशे से वकील थे।

(ग) लेखिका ने माँ को व्यक्तित्वविहीन कहा है, क्योंकि–

(*i*) माँ की अपनी कोई इच्छा नहीं थी।
(*ii*) उनका कोई अपना स्वार्थ नहीं था।
(*iii*) वे परिवार के प्रति पूर्णतः समर्पित थीं।
(*iv*) पारिवारिक दायित्वों के निर्वाह में उनके व्यक्तित्व का विलय हो गया था।

(घ) इंदौर में लेखिका के पिताजी की समाज में स्थिति थी–

(*i*) एक सामान्य व्यक्ति की।
(*ii*) एक ग़ैर-ज़िम्मेदार इंसान की।
(*iii*) एक सामाजिक व्यक्ति की।
(*iv*) एक प्रतिष्ठित, सम्मानित एवं प्रसिद्ध व्यक्ति की।

(ङ) 'जन्मी तो मध्यप्रदेश के भानपुरा गाँव में थी, लेकिन यादों का सिलसिला शुरू होता है अजमेर से' वाक्य का प्रकार-भेद है–

(*i*) साधारण
(*ii*) संयुक्त
(*iii*) मिश्र
(*iv*) जटिल

Answer:

(क) (*ii*) बीती बातों के क्रमबद्ध विवरण की शुरुआत।
(ख) (*iii*) अध्ययनशील व्यक्ति थे।
(ग) (*iii*) वे परिवार के प्रति पूर्णतः समर्पित थीं।
(घ) (*v*) एक प्रतिष्ठित, सम्मानित एवं प्रसिद्ध व्यक्ति की।
(ङ) (*ii*) संयुक्त।

2011

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 34.
'एक कहानी यह भी' की लेखिका के व्यक्तित्व पर किन-किन व्यक्तियों का, किस रूप में प्रभाव पड़ा?
Answer:
प्रश्न 27 का उत्तर देखें।

Question 35.
'एक कहानी यह भी' आत्मकथ्य की लेखिका को बचपन में घर की सीमा से बाहर जाने की इज़ाज़त क्यों नहीं थी? क्या लड़कियों के लिए अभी भी यही स्थिति है?
Answer:
'एक कहानी यह भी' आत्मकथ्य की लेखिका को बचपन में घर की सीमा से बाहर जाने की इजाज़त नहीं थी क्योंकि उस समय की पारिवारिक एवं सामाजिक मान्यताएँ ऐसी थीं कि लड़की को घर से बाहर जाने नहीं दिया जाता था। यद्यपि उस समय घर की सीमा परिवार से हटकर पड़ोस और मोहल्ले तक फैली हुई थी, पड़ोस और मोहल्ला परिवार का ही एक अभिन्न अंग था। परंतु उसके बाहर लड़कियों के लिए कोई इजाज़त नहीं थी। आज परिस्थितियाँ बदल गई हैं। पड़ोस और मोहल्ले की परंपराएँ आज समाप्त हो गई हैं। अधिकांश लोग फ़्लैटों में रहने लगे हैं। आजकल लड़कियों के लिए बाहर जाने की कोई बंदिश नहीं है। वे कहीं भी जा सकती हैं। किसी भी स्तर पर खेल खेल सकती हैं। उनका राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भाग लेना उसकी योग्यता पर निर्भर करता है। पढ़ने के लिए स्थान या क्षेत्र की कोई सीमा नहीं है। यहाँ तक कि आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक किसी भी क्षेत्र में वह भाग ले सकती हैं एवं कार्य कर सकती हैं। अब वे किसी बंदिशों की मोहताज़ नहीं हैं।

Question 36.
'एक कहानी यह भी' पाठ के आधार पर देश के स्वाधीनता आंदोलन में लेखिका की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।
Answer:
प्रश्न 13 का उत्तर देखें।

Question 37.
'एक कहानी यह भी' पाठ की लेखिका की माँ के व्यक्तित्व की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

Answer:

'एक कहानी यह भी' पाठ के आधार पर लेखिका की माँ की विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

(*i*) **परिवार के प्रति समर्पण की भावना–** लेखिका की माँ अपने परिवार के प्रति पूर्ण समर्पित थीं। वह सुबह से शाम तक बच्चों की इच्छाओं और पिताजी की आज्ञाओं का पालन करने में तत्पर रहती थीं।

(*ii*) **धैर्य और सहनशक्ति की प्रतिमूर्ति–** लेखिका की माँ में धरती से भी ज़्यादा धैर्य और सहनशक्ति थी। वह अपना प्राप्य समझकर उनके पिताजी की हर ज़्यादती को सहन करती थीं। बच्चों की हर फ़रमाइश और ज़िद को वह धैर्यपूर्वक पूरा करती थीं।

(*iii*) **त्याग की मूर्ति–** लेखिका की माँ त्याग की प्रतिमूर्ति थीं। वह सदैव दूसरों के लिए कार्य करने में मग्न रहती थीं। ज़िंदगी भर उन्होंने न अपने लिए कुछ चाहा और न ही अपने लिए कुछ माँगा। केवल दूसरों को देती ही रहीं।

(*iv*) **स्नेह और ममत्व से पूर्ण–** लेखिका की माँ स्नेह और ममत्व से लबालब भरी हुई थीं। लेखिका के सभी भाई-बहिनों का लगाव माँ के ही साथ था।

Question 38.

'एक कहानी यह भी' के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि लेखिका की बेपढ़ी-लिखी माँ भारतीय स्त्री की प्रतिनिधि पात्र है।

Answer:

'एक कहानी यह भी' पाठ की लेखिका की माँ भारतीय स्त्री का प्रतिनिधिपात्र हैं। भारतीय नारी युग से पुरुष के शोषण को सहन करती आई है। उसके आश्रय में रहकर वह स्वयं को कमज़ोर समझती रही है इसलिए हर दबाव को सहन करना उसकी सहज प्रवृत्ति बन गई है। सहशीलता, त्याग उसके जीवन का आधार है। यही रूप लेखिका की माँ में दिखाई देता है। वह भारतीय नारी का जीता-जागता रूप थीं। सुबह से शाम तक बच्चों की इच्छाओं और पति की आज्ञाओं का पालन करने में तत्पर रहती थीं। धैर्य और सहनशीलता की प्रतिमूर्ति बन वह पति की हर ज़्यादती को सहन करती थीं। हर काम को सिर झुकाकर, फ़र्ज़ समझ कर करते रहना, उसकी आदत बन गई थी। उसने ज़िंदगी भर अपने लिए कुछ नहीं माँगा। वास्तविकता यह है कि वे स्नेह और ममत्व से भरी पूर्ण परंपरागत, नितांत घरेलू एवं निरीह भारतीय स्त्री थीं।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 39.

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए–

अजमेर से पहले पिता जी इंदौर में थे जहाँ उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी, सम्मान था, नाम था। कांग्रेस के साथ-साथ वे समाज-सुधार के कामों से भी जुड़े हुए थे। शिक्षा के वे केवल उपदेश ही नहीं देते थे,

बल्कि उन दिनों आठ-आठ, दस-दस विद्यार्थियों को अपने घर रखकर पढ़ाया है जिनमें से कई तो बाद में ऊँचे-ऊँचे ओहदों पर पहुँचे। ये उनकी खुशहाली के दिन थे और उन दिनों उनकी दरियादिली के चर्चे भी कम नहीं थे। एक ओर वे बेहद कोमल और संवेदनशील व्यक्ति थे तो दूसरी ओर बेहद क्रोधी और अहंवादी।

(क) **गद्यांश में किसके पिता की ओर संकेत है?**

(*i*) शीला अग्रवाल के
(*ii*) डॉ० अंबालाल के
(*iii*) मन्नू भंडारी के
(*iv*) कॉलेज की प्रिंसिपल के

(ख) **इंदौर में पिता के मान-सम्मान का कारण था–**

(*i*) कांग्रेसी होना
(*ii*) समाज-सुधारक होना
(*iii*) उपदेशक होना
(*iv*) संवेदनशील होना

(ग) **शिक्षा के प्रति पिता के लगाव का उदाहरण है–**

(*i*) शिक्षा का उपदेश देना
(*ii*) उनका अध्यापक होना
(*iii*) अपने घर पर विद्यार्थियों को पढ़ाना
(*iv*) उनके विद्यार्थियों का ऊँचे पद पाना

(घ) **पिता के व्यक्तित्व के परस्पर विरोधी गुण हैं–**

(*i*) अहंवादिता और रूढ़िवादिता
(*ii*) उदारता और संकीर्णता
(*iii*) संपन्नता और निर्धनता
(*iv*) कोमलता और क्रोध

(ङ) **दरियादिली का अर्थ है–**

(*i*) उदारता
(*ii*) कृपणता
(*iii*) सहनशीलता
(*iv*) संपन्नता

Answer:

(क) (*i*) मन्नू भंडारी के
(ख) (*ii*) समाज-सुधारक होना
(ग) (*iii*) अपने घर पर विद्यार्थियों को पढ़ाना
(घ) (*iv*) कोमलता और क्रोध
(ङ) (*i*) उदारता

Question 40.

निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनिए–

पिता के ठीक विपरीत थीं हमारी बेपढ़ी-लिखी माँ। धरती से कुछ ज़्यादा ही धैर्य और सहनशक्ति थी शायद उनमें। पिताजी की हर ज़्यादती को अपना प्राप्य और बच्चों की हर उचित-अनुचित फ़रमाइश और ज़िद को अपना फ़र्ज़ समझकर बड़े सहज भाव से स्वीकार करती थीं वे। उन्होंने ज़िंदगी-भर अपने लिए कुछ माँगा नहीं, चाहा नहीं– केवल दिया ही दिया। हम भाई-बहनों का सारा लगाव (शायद सहानुभूति से उपजा) माँ के साथ था लेकिन निहायत असहाय मजबूरी में लिपटा उनका यह त्याग कभी मेरा आदर्श नहीं बन सका... न उनका त्याग, न उनकी सहिष्णुता।

(क) कौन-सी विशेषता माँ की नहीं है?

(*i*) बेपढ़ा-लिखा होना
(*ii*) सबकी सेवा करना
(*iii*) आवेश और क्रोध
(*iv*) धैर्य और सहनशीलता

(ख) कैसे कहा जा सकता है कि लेखिका की माँ में धरती से अधिक सहनशक्ति थी?

(*i*) पिता की ज़्यादतियाँ और बच्चों की फ़रमाइशें मानती थीं।
(*ii*) उन्होंने पारिवारिक दायित्वों को निभाया था।
(*iii*) अपने शांत स्वभाव के कारण सहनशील थीं।
(*iv*) धनाभाव की कठिनाइयों ने उन्हें सहनशील बना दिया था।

(ग) माँ ने किसे क्या नहीं दिया?

(*i*) संसार को लगाव
(*ii*) अपनों को सहानुभूति
(*iii*) परिवार को प्यार
(*iv*) अपने आपको सुख-सुविधा

(घ) लेखिका के लिए उनकी माँ की त्याग-भावना आदर्श क्यों नहीं बन सकी?

(*i*) पिता के व्यवहार के कारण
(*ii*) विवशता में किए जाने के कारण
(*iii*) ईर्ष्या के कारण
(*iv*) अतीत में घटी घटनाओं की प्रतिक्रिया के कारण

(ङ) 'हम भाई-बहिनों का सारा लगाव माँ के साथ था लेकिन निहायत असहाय मजबूरी में लिपटा उनका यह त्याग मेरा आदर्श न बन सका'– यह किस प्रकार का वाक्य है?

(*i*) मिश्र
(*ii*) संयुक्त
(*iii*) साधारण
(*iv*) सरल

Answer:

(क) (*iii*) आवेश और क्रोध

(ख) (*i*) पिता की ज़्यादतियाँ और बच्चों की फ़रमाइशें मानती थीं।

(ग) (*iv*) अपने आपको सुख-सुविधा

(घ) (*iv*) विवशता में किए जाने के कारण

(ङ) (*ii*) संयुक्त

Question 41.

निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनिए–

यों खेलने को हमने भाइयों के साथ गिल्ली-डंडा भी खेला और पतंग उड़ाने, काँच पीसकर माँजा सूतने का काम भी किया, लेकिन उनकी गतिविधियों का दायरा घर के बाहर ही अधिक रहता था और हमारी सीमा थी घर। हाँ, इतना ज़रूर था कि उस ज़माने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं, बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं। इसलिए मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबंदी नहीं थी, बल्कि कुछ घर तो परिवार का हिस्सा ही थे। आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी ज़िंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ़्लैटों में रहने वालों को हमारे इस परंपरागत 'पड़ोस कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है।

(क) **लेखिका के भाइयों की गतिविधियों का दायरा घर के बाहर और लेखिका का घर की सीमा के भीतर क्यों था?**

(*i*) लड़कियों और लड़कों में भेदभाव करने के कारण।
(*ii*) लड़कियों का उच्छृंखल होने की आशंका के कारण।
(*iii*) लड़कियों की सुरक्षा लड़कों के द्वारा किए जाने के कारण।
(*iv*) लड़कियों को घर में ही सुरक्षित मानने के कारण।

(ख) **'घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं...' कथन का आशय है–**

(*i*) आपसी प्रेमभाव एवं भाईचारा होता था।
(*ii*) मुहल्ला और पड़ोस भी घर जैसा होता था।
(*iii*) पारिवारिक लोग उदार होते थे।
(*iv*) सौहार्द की भावना महत्त्वपूर्ण थी।

(ग) 'पड़ोस कल्चर' के न पनपने का कारण है–

(*i*) अपनी ज़िंदगी खुद जीने का आधुनिक दबाव

(*ii*) फ़्लैटों में रहने की विवशता

(*iii*) स्वार्थी मनोवृत्ति का प्रभुत्व

(*iv*) बौद्धिकता की प्रबलता

(घ) परंपरागत 'पड़ोस कल्चर' के विच्छिन्न होने के दुष्परिणाम हैं–

(*i*) स्वार्थभाव प्रबल हो गया है। (*ii*) हम संकुचित और असहाय हो गए हैं।

(*iii*) पारस्परिक प्रेमभाव कमज़ोर पड़ रहा है। (*iv*) हम फ़्लैटों में रहने लगे हैं।

(ङ) 'उनकी गतिविधियों का दायरा घर के बाहर ही अधिक रहता था और हमारी सीमा थी घर'– किस प्रकार का वाक्य है?

(*i*) साधारण वाक्य (*ii*) मिश्र वाक्य

(*iii*) संयुक्त वाक्य (*iv*) सरल वाक्य

Answer:

(क) (*iv*) लड़कियों को घर में ही सुरक्षित मानने के कारण।

(ख) (*ii*) मुहल्ला और पड़ोस भी घर जैसा होता था।

(ग) (*ii*) फ़्लैटों में रहने की विवशता

(घ) (*ii*) हम संकुचित और असहाय हो गए हैं।

(ङ) (*iii*) संयुक्त वाक्य

2010

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 42.

'एक कहानी यह भी'– आत्मकथ्य की लेखिका के व्यक्तित्व को बनाने में किस-किस का, किन रूपों में योगदान रहा?

Answer:

'एक कहानी यह भी' की लेखिका मन्नू भंडारी के अनुसार उनके व्यक्तित्व की संरचना में उनके पिता का तथा कॉलेज की हिंदी अध्यापिका श्रीमती शीला अग्रवाल का योगदान सर्वाधिक रहा। उनके पिता को श्वेत रंग के प्रति अत्यधिक आकर्षण था। अतः लेखिका के साँवले रंग के प्रति उनके मन में उपेक्षा का भाव रहता था। लेखिका के मन में इसके कारण आक्रोश और विद्रोह की भावना रहती थी जो उनके साहित्य में भी प्रदर्शित हुई है। श्रीमती शीला अग्रवाल ने उन्हें उत्कृष्ट साहित्य का चयन करना सिखाया तथा उनकी रुचि को परिष्कृत किया था। बाद में राजनीति में उन्हें सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए भी प्रेरित किया था।

Question 43.

'एक कहानी यह भी' पाठ की लेखिका के अपने पिता के साथ वैचारिक टकराहट के कारणों पर प्रकाश डालिए।

Answer:

लेखिका के अपने पिता के साथ कई कारणों से वैचारिक टकराहट होती थी। जैसे एक ओर तो उसके पिता उसे सदैव आसपास के वातावरण और देश के लिए जागरूक होने को कहते थे। उसके मन में देश की स्वतंत्रता की अलख जगाना चाहते थे। वे चाहते थे कि लेखिका स्वतंत्रता आंदोलन में भाग ले, परंतु उसके कार्यक्षेत्र को घर के अंदर तक सीमित भी कर देना चाहते थे। वे चाहते थे कि लेखिका अपने विचार तो सशक्त रखे और प्रकट भी करे, परंतु सड़कों पर उतरकर यह सब करे, यह उन्हें नहीं भाता था। फलस्वरूप दोनों के अहं टकरा जाते थे।

Question 44.

'एक कहानी यह भी' पाठ की लेखिका ने 'आस-पड़ोस' के महत्त्व के विषय में जो विचार प्रकट किए हैं? आज के महानगरीय परिवेश में उनकी प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।

Answer:

लेखिका ने 'आस-पड़ोस' के महत्त्व को बताया है कि लोग आपस में सुख-दुख बाँटते थे तथा घर की सीमा मोहल्ले तक फैली हुई होती थी अर्थात लोग एक-दूसरे के घर ख़ूब आया-जाया करते थे। उनके संबंधों में स्नेह व विश्वास था। आज की महानगरीय संस्कृति में आस-पड़ोस के लिए कोई स्थान नहीं है। लोग अपने घरों तक सीमित होकर रह गए हैं। लोगों का परस्पर प्रेम, उनकी सुरक्षा, उदारता, सामाजिकता सब कुछ धीरे-धीरे समाप्त हो रहे हैं।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 45.

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लीखिए–

पिताजी की आज़ादी की सीमा यहीं तक थी कि उनकी उपस्थिति में घर में आए लोगों के बीच उठूँ-बैठूँ, जानूँ-समझूँ। हाथ उठा-उठाकर नारे लगाती, हड़तालें करवाती, लड़कों के साथ शहर की सड़कें नापती, लड़की को अपनी सारी आधुनिकता के बावजूद बर्दाश्त करना उनके लिए मुश्किल हो रहा था तो किसी की दी हुई आज़ादी के दायरे में चलना मेरे लिए। जब रगों में लहू की जगह लावा बहता हो तो सारे निषेध, सारी वर्जनाएँ और सारा भय कैसे ध्वस्त हो जाता है, यह तभी जाना और अपने क्रोध से सबको थरथरा देने वाले पिताजी से टक्कर लेने का जो सिलसिला तब शुरू हुआ था, राजेंद्र से शादी की, तब तक वह चलता ही रहा।

(क) लेखिका और उसके पिता के मध्य मनमुटाव का क्या कारण था?

(ख) लेखिका की रगों में लहू की जगह लावा क्यों बह रहा था?

(ग) लेखिका के लिए निर्धारित निषेध और वर्जनाएँ क्या थीं? वे किसके कारण ध्वस्त हुईं?

Answer:

(क) लेखिका और उसके पिता के मध्य मनमुटाव का कारण वैचारिक अंतर था। पिताजी यह तो चाहते थे कि उनकी बेटी घर में आए लोगों के बीच उठे-बैठे, किंतु उन्हें लेखिका का हड़तालें करवाना, नारे लगाना, लड़कों के साथ आंदोलन कतरे हुए सड़कों पर घूमना बिलकुल पसंद नहीं था, जबकि लेखिका अपने पिताजी द्वारा दी गई केवल घर की आज़ादी के दायरे में नहीं चलना चाहती थीं।

(ख) 'रगों में लावा बहना' मुहावरा है, जिसका अर्थ है– मन में विराध की चाह का उठना। लेखिका भी पिताजी द्वारा दी गई केवल घर की आज़ादी के दायरे में नहीं चलना चाहती थीं। वे निषेधों, वर्जनाओं तथा भय को तोड़कर सामाजिक गतिविधियों एवं आज़ादी के आंदोलनों में खुलकर भाग लेना चाहती थीं। अतः पिताजी की बंदिशों को तोड़ने के लिए लेखिका की रगों में लावा बह रहा था।

(ग) लेखिका के पिताजी यह नहीं चाहते थे कि लेखिका हड़तालें करवाए, हाथ उठा-उठाकर नारे लगाए और लड़कों के साथ आंदोलन करते हुए सड़कों पर घूमे। इस कारण लेखिका के लिए निर्धारित निषेध और वर्जनाएँ यही थीं कि वह ऐसी गतिविधियों से स्वयं को दूर रखे, किंतु लेखिका

आधुनिक विचारों की सशक्त युवती थीं इसलिए उन्होंने पिताजी द्वारा लगाई गई बंदिशों को तोड़ने की ठानी। इस प्रकार उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति व विरोधी स्वभाव के कारण ये बंदिशें ध्वस्त हुईं।

Question 46.

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लीखिए–

हमने भाइयों के साथ गिल्ली-डंडा भी खेला और पतंग उड़ाने, काँच पीसकर माँजा सूतने का काम भी किया, लेकिन उनकी इन गतिविधियों का दायरा घर के बाहर ही अधिक रहता था और हमारी सीमा थी घर। हाँ, इतना ज़रूर था कि उस ज़माने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं इसलिए मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबंदी नहीं थी, बल्कि कुछ घर तो परिवार का हिस्सा ही थे। आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी ज़िन्दगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव के महानगरों के फ़्लैट में रहने वालों के हमारे इस परंपरागत 'पड़ोस-कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है।

(क) भाइयों की गतिविधियों का दायरा घर से बाहर और लेखिका का घर तक ही सीमित क्यों था?

(ख) घर की दीवारों का मोहल्ले तक फैलने का क्या अभिप्राय है?

(ग) परंपरागत 'पड़ोस-कल्चर' क्या है? उसके विच्छिन्न होने का समाज पर क्या दुष्प्रभाव दिखाई देता है।

Answer:

(क) लेखिका के पिताजी लड़कियों को घर के बाहर निकलने की आज़ादी देने के पक्षधर नहीं थे। इसी कारण भाइयों की गतिविधियों का दायरा घर से बाहर तक था क्योंकि वे लड़के थे और लेखिका का दायरा घर तक ही सीमित होने का कारण यह था कि वह एक लड़की थी। लड़का-लड़की में इसी अंतर के कारण वे मोहल्ले आदि से बाहर जाकर खेल सकते थे, परंतु लेखिका नहीं।

(ख) घर की दीवारों का मोहल्ले तक फैलने का अर्थ है पड़ोस और मोहल्ले के अन्य घर भी एक की समझे जाते थे। घर का दायरा विस्तृत था। मोहल्ले के किसी भी अन्य घर में जाने पर पाबंदी नहीं थी।

(ग) परंपरागत 'पड़ोस-कल्चर' है आस-पड़ोस वालों को आत्मीय मानना। उनके साथ मिलजुल कर रहना, एक-दूसरे के सुख-दुख में साथ देना, लेन-देन करना, दिन-त्योहार मनाना आदि। उसके विच्छिन्न होने का समाज पर यह दुष्प्रभाव हुआ है कि हम संकुचित, असहाय और असुरक्षित हो गए हैं।

Question 47.

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लीखिए–

गिरती आर्थिक स्थिति ने ही उनके व्यक्तित्व के सारे सकारात्मक पहलुओं को निचोड़ना शुरू कर दिया। सिकुड़ती आर्थिक स्थिति के कारण और अधिक विस्फारित उनका अहं उन्हें इस बात तक की अनुमति नहीं देता था कि वे कम-से-कम अपने बच्चों को तो अपनी आर्थिक विवशताओं का भागीदार बनाएँ। नवाबी आदतें, अधूरी महत्त्वाकांक्षाएँ, हमेशा शीर्ष पर रहने के बाद हाशिए पर सरकते चले जाने की यातना क्रोध बनकर हमेशा माँ को कँपाती, थरथराती रहती थी। 'अपनों' के हाथों विश्वासघात की जाने की कैसी गहरी चोटें होंगी। वे जिन्होंने आँख मूँदकर सबका विश्वास करने वाले पिता को बाद के दिनों में इतना शक्की बना दिया था कि जब-तब हम लोग भी उसकी चपेट में आते ही रहते।

(क) 'व्यक्तित्व के सकारात्मक पहलुओं' से लेखिका का क्या आशय है?

(ख) सिकुड़ती आर्थिक स्थिति ने लेखिका के पिताजी को किस रूप में प्रभावित किया?

(ग) लेखिका के पिता क्रोधी और शक्की स्वभाव के क्यों हो गए थे?

Answer:

(क) 'व्यक्तित्व के सकारात्मक पहलुओं' से लेखिका का आशय अच्छी और उन्नत सोच, स्वस्थ एवं व्यापक विचार, प्रसन्नता, विश्वास तथा आत्मविश्वास आदि गुणों से है।

(ख) सिकुड़ती आर्थिक स्थिति ने लेखिका के पिताजी की विचारधारा और व्यक्तित्व दोनों ही बदल दिए। आशा निराशा बन गई, हर्ष के स्थान पर विषाद रहने लगा तथा विश्वास का स्थान अविश्वास ने ले लिया तथा अधूरी महत्त्वाकांक्षाओं और शीर्ष से हाशिए पर आ जाना, उन्हें मानसिक रूप से भी प्रताड़ित करने लगा।

(ग) लेखिका के पिता क्रोधी और शक्की स्वभाव के इसलिए हो गए क्योंकि 'अपनों' ने उन्हें विश्वासघात की चोट दी थी। पहले वे आँख मूँदकर विश्वास करते थे, बाद में वे शक्की बन गए थे तथा आर्थिक स्थिति के चरमरा जाने से वे क्रोधी भी हो गए थे।